संदीप शर्मा

## शिखर-यात्रा

मन की जड़ता त्याग मनुज ! तुझे उत्तुंग शिखर है पाना
माना कातरता करती शिथिल पर विवेक-पथ पर जाना
मृदुभावों के गुलदस्ते से सबका सत्कार निभाना
मिलता जो भी पथ में उसको स्नेहिल बन अपनाना ।
कभी राह होगी कठिन पर आगे बढ़ते ही जाना
आगे लोग बढ़े तुमसे पर फिर भी मत घबराना
संघर्षशील जीवन है इसमें ईर्ष्या-द्वेष मत लाना
ठोकर खाने वाले को राही पहले गले लगाना ।

उच्च शिखर पाना प्रथम, किसे अच्छा नहीं लगता
पद-प्रतिष्ठा का मद कदाचित् सब पर ही है चढ़ता
साथ जो चलते उनको अपनी निष्ठा तुम सँभलाना
सर्वप्रिय बन परिश्रमी जन ऊपर उठते जाना ।

अपनी छोड़े, सबकी सोचे, संसार याद उसे करता
स्वयं बढ़कर मनुज अकेला एकाकी विचरता
श्रेष्ठता का भाव एक सद्गुण है दर्शाता
'मैं ही मात्र श्रेष्ठ' यह मिथ्याभिमान बताता ।

तेरी यात्रा और लक्ष्य उच्च शिखर को पाना
नहीं कोई प्रतिस्पर्धी मग में तत्त्व यह है जाना
व्यर्थ चिंता छोड़ जगत् की चंतन को अपनाना
बाधाओं के पार जाकर खुशियाँ संग मनाना ।

## श्रद्धा सुमन चढ़ाते जाएँ

नींव के पत्थर के कारण ही कंगूरा चमक पाता है
आधार उसका पाकर ही तो नभ में दमक पाता है
ऐसे ही थे कई वीर सपूत जो बेनामी में खो गए
आजादी का महल बनाकर गुमनाम से हो गए।
वतन के रखवालों में उनका भी नाम लिया जाए
इतिहास ने भुलाया जिनको उनको याद किया जाए
मर गए हंसते-हंसते जो सीने पर गोली खाकर के
देशभक्ति का जज्बा सबको यूं ही सिखा करके।
स्वतंत्रता के यज्ञ में निस्वार्थ आहुति उन्होंने दी
भारत माँ के खातिर ही तो जिंदगानी उन्होंने जी
नहीं चाहिए और कुछ केवल देशभक्ति प्यारी थी
सिर कटते चले गए पर हिम्मत कभी न हारी थी।
जलियांवाला बाग हो या फिर स्वतंत्रता- संग्राम
नहीं जानते आज भी हम उन कई वीरों के नाम
महान उनकी हस्ती और अविस्मरणीय योगदान
वंदे मातरम गाते-गाते हुए अमर थे वीर जवान।
आजादी का अमृत महोत्सव आज हम मनाते हैं
उन अमर बलिदानियों की गौरवगाथा गाते हैं
माखनलाल चतुर्वेदी के पुष्प सभी बन जाते हैं
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा शान से लहराते हैं।
75 साल की आजादी के गीत खुशी से गाते जाएँ
आत्म-निर्भरता का मंत्र जीवन में अपनाते जाएँ
अमर जवानों की गाथाएं पढ़ते और पढ़ाते जाएँ
आओ उनको याद करें हम श्रद्धा सुमन चढ़ाते जाएँ।